विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

ISSN 0972-5636

भारतीय आधुनिक शिक्षा

वर्ष 36 अंक 3 जनवरी 2016

इस अंक में

संपादकीय		3
नवउदारवादी परिदृश्य में शिक्षा के संवैधानिक और नीतिगत प्रावधानों की समीक्षा	संदीप	5
भूमंडलीकरण, युवा जीवन एवं उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ	विपिन कुमार शर्मा	15
भावी शिक्षा नीति एवं शिक्षकों की अपेक्षाएँ	केवलानंद कांडपाल	23
कैसी होगी शिक्षा 2025 में?	शशि प्रभा	33
वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में पद्धति द्वय की प्रासंगिकता	आरती सिंह	41
कठघरे में हैं शिक्षक?	उषा शर्मा	54
पूर्व प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप	पद्मा यादव	61
गिजुभाई की 'एकल शिक्षक पद्धति' की वर्तमान संदर्भ में सार्थकता	अस्मा	73
शोर बनाम प्रबंधन	नीरज शर्मा	80
गिनने की समझ	सत्यवीर सिंह अनिल कुमार तेवतिया	84

कविता और कविता शिक्षण

संजय रॉय *

कविता का नाम आते ही सबसे पहले दिमाग में अबुझ-सी छवि आ जाती है। कविता दरअसल महसूस करने की चीज़ है और इसका सीधा संबंध भावनाओं से है। जबकि अक्सर काव्य-पंक्तियों को रटने पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है न कि समझने पर। हमारी शिक्षण-पद्धति में कविता को छात्रों के लिए भारी भरकम बना दिया गया है। जबकि कविता को इसकी प्रकृति के अनुसार ही सीखा जा सकता है। इसमें शामिल होकर ही इसे समझा जा सकता है। इसके लिए सिर्फ स्कूल का एक पीरियड काफ़ी नहीं। इसके लिए कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती है। यह एक लंबी प्रक्रिया है। छात्र इसमें रुचि लें इसके लिए बहुत ज़रूरी है कि इसे जीवन में संगीत की तरह शामिल किया जाए, बजाय इसे बोझिल बनाने के।

कविता बहुत ही कोमल चीज़ है। कविता जब बनती है; तो बनती है रोशनी, बनती है धरती, बनता है आकाश। कविता जब बनती है; तो बोलती है चिड़िया, खिलते हैं फूल और मोजरा जाता है आम का वह बूढ़ा पेड़ भी। इस तरह आदमी, आदमी बनता है, जब बनती है कविता। कह सकते हैं अपने समय, समाज, परिवेश और प्रकृति के बीच सचेत आवाजाही का नाम है कविता। इस प्रकार कोमलता के साथ चुपके-से दायित्वबोध घुस आता है कविता में और कविता व्यक्तिगत वस्तु से सामाजिक वस्तु में तब्दील हो जाती है।

कविता करना एक सृजनात्मक काम है। इसलिए वैयक्तिक काम भी है। चिंतन और चेतना इस वैयक्तिक काम के साथ मिलकर इसको बृहत्तर आशयों से जोड़ते हैं, एक दायित्वबोध के साथ इसके सामाजिक आधार का गठन करते हैं। कविता के व्यक्तिगत वस्तु से सामाजिक वस्तु में तब्दील होने की यात्रा में उसे एक सृजनात्मक प्रक्रिया से गुज़रना होता है।

* *शोध छात्र*, हिंदी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल